vt knkjh us bekes gqlSu vySgLlyke!

मौलाना हसन ज़फ़र नक़वी इजतेहादी साहिब (कराची)

अनुवादक – मौलाना ख़ुर्शीद अली रिज़वी साहिब

आप ही वह हुसैनी लश्कर हैं जो शीओयत को अल्लाह के इनाम के रूप में मिला है। यूँ तो सारी मिल्लते जाफरिया ही इस उनवान की मिस्दाक़ है मगर इस ज़माने में अज़ादारी अपनी बढ़ती हुई मन्ज़िलें तय करती हुई उस जगह पहुँच चुकी है कि अब पूरी तरह इसमें शोबे बन चुके हैं। ओलमा, ख़तीब, ज़ाकेरीन, मर्सिया पढ़ने वाले, मज्लिसों के बानी, मातमी अन्जुमनें, स्काउट के दस्ते और इसके अलावा भी बहुत से हिस्से।

हमें पूरा यक़ीन है कि हम ही वह अज़ादाराने हुसैनी हैं जो हुसैन (अ0) की माँ की दुआ का हासिल हैं इसलिए हमें जब तक जीना है हुसैन (अ0) के ग़म के साथ जीना है।

लेकिन यहाँ एक सवाल पैदा होता है कि सिर्फ मज्लिसे अज़ा कर लेने से हम सबकी ज़िम्मेदारी पूरी हो जाती है? इस अज़ादारी को ले लीजिये कुछ जगहों पर बल्कि हर जगह झगड़ा इस बात पर है कि एक ख़ास जमात चाहती है कि अज़ादारी रुक जाए। इस मसअले पर बात आगे बढ़ती है, झगड़े की नौबत आ जाती है। कितने ही अज़ादार जामे शहादत पी चुके हैं, कितने ही अज़ादारी के लिए ज़ंजीरों में जकड़े जा चुके हैं। क्या उन शहीदों के वारिसों की ज़िम्मेदारी और क़ैदियों के मसाएल हल करना हमारी ज़िम्मेदारी नही है, क्या उस खास, तैयार शैतानी जमात के ख़िलाफ क़ौम को तैयार करना हमारी ज़िम्मेदारी नही है?

लेकिन अजीब बात यह है कि हमारी ही सफों में यह आवाज़ें उठने लगती है कि यह सियासत है और हमारा सियासत से कोई तअल्लुक़ नही है। अगर यह सियासत है और हमारा सियासत से कोई तअल्लुक़ नही है तो यह मसाएल कौन हल करेगा? कैसे हल करेगा? यह मसाएल आपको और हम सबको मिल कर ही हल करने हैं।

बताइये क्या यह अज़ादारी खुद एक एहतेजाज नही है। क्या यह जुलूसे अज़ा एहतेजाजी जुलूस नही है। हम तो पैदा ही ज़ुल्म के ख़िलाफ एहतेजाज करने के लिए हुए हैं लेकिन एक बनाये हुए तरीक़े से अज़ादारी को सिर्फ एक रस्मी कारवायी तक घेरे रखने की साज़िश पर अमल हो रहा है और इस इबादत को रस्मी कारवायी में बदला जा रहा है।

अज़ादार जो पैदाईशी तौर पर एक इन्क़िलाबी होता है धीरे–धीरे उसे शक्की बनाया जा रहा है। अज़ा ख़ाने जो इन्क़िलाब का मरकज़ हैं कुछ लोगों की जागीरें बनते जा रहे हैं। अपनी–अपनी जगहों पर भीड़ जमा करने के लिए तरह–तरह की चालें चली जा रही हैं और बाअमल आलिमों, ज़िम्मेदार ख़तीबों और ज़िक्र करने वालों के बजाय ऐसे लोगों को दावत दी जाती है जो न सिर्फ यह कि इल्मी तौर पर कमज़ोर होते हैं बल्कि अपनी कमज़ोरियों पर पर्दा डालने के लिए अज़ादारों और अज़ादारी के साथ खेल खेलते हैं।

अफसोस वाली बात यह है कि अगर कोई

ऐसे धोका देने वाले लोगों के धोके को सामने लाना चाहता है तो फौरन उसे शीआीयत से निकालने और अज़ादारी के दुश्मन होने का सार्टिफिकेट दे दिया जाता है। हमारी मिल्लत को इतने तजुर्बों से गुज़रने के बाद इतना सादा नही होना चाहिए कि हर फायदा उठाने वाला, अहले बैत से मुहब्बत की आड़ में उसे अपने मक़ासिद पूरे करने के लिए बेवक़ूफ़ बना दे।

यह एक ऐसी बात है जिस पर मुझे बड़ी एहतियात से क़लम उठाना पड़ रहा है क्योंकि मैं जानता हूँ कुछ लोग इस तहरीर को सिर्फ इसलिए पढ़ेंगे कि इसमें कोई एक आधा ऐसा जुमला उन्हें मिल जाए जिसे वह ले उड़ें और लोगों के बीच उसे फैला कर मुझे अज़ादारी का मुख़ालिफ़ और न जाने क्या–क्या मशहूर करा दें।

ऐ अज़ादाराने हुसैन (अ0)! आप ऐसे दीन और ईमान बेचने वालों से हर वक़्त होशियार रहें जो आपके सामने बड़े अज़ादार और अहले बैत (अ0) के बड़े चाहने वालों का रूप धारकर आते हैं और दीन व मिल्लत की पीठ में छुरा घोंपते हैं। उनकी हरकतें क़ुरैश के काफिरों के उन सरदारों से मिलती जुलती हैं जो खुदा के घर में बैठकर लोगों को खुदा से गुमराह करते थे।

उनकी एक निशानी यह है कि यह हर वक़्त झगड़ा फैलाने पर उतारु रहते हैं। इख़्तेलाफात को हवा देना, ग़लत फहमियाँ पैदा करना, लोगों को शक में डालना, शक वाली चीज़ों को खुली चीज़ों से रद करना, अल्लाह के हुक्मों का मज़ाक़ उड़ाना, बेअमली का शौक़ दिलाना, वाजिबात के ख़िलाफ दलीलें देना, ओलमा को तनक़ीद का निशाना बनाना, ईरानी एजेण्ट का लेबल लगाना, दीन के फैलाने वालों को कमतर समझना, दीन की सही बातों का इन्कार करना यह सब उसके पसन्दीदा काम हैं। यह बात–बात में क़ुरैश के काफिरों का यह जुमला दोहराते हैं कि हम तो पहली बार देख रहे हैं या पहली बार सुन रहे हैं हमारे बाप–दादा ने तो यह नहीं किया था। अज़ीज़ो! यह दीन का मसला है हमें क़दम–क़दम पर मुहम्मद (स0) और आले मुहम्मद (अ0) की शरीयत की पासदारी करना है। और हमारा मक़सद हर इबादत से खुदा और अहले बैत (अ0) की खुशी होना चाहिए न कि लोगों की।

ऐ आशिक़ाने हुसैन (अ0)! ज़रा ठण्डे दिल से ग़ौर कीजिये कि दीन किसी के बाप–दादा की सुन्नत का नाम है या खुदा के रसूल (स0) और पाक इमामों की तालीमात का नाम है? दीन को खुदा, रसूल (स0) और मासूम इमामों की तालीमात के साये में परखा जाएगा न किसी के बाप–दादा के अमल की रौशनी में और फिर बाप–दादा पर भी तो झूठा इल्ज़ाम है। क्या हमारे और आपके बाप–दादा यही काम अन्जाम दिया करते थे।

आप आज ही के दौर को देख लीजिये कि कितनी चीज़ें अभी कुछ सालों की पैदावार हैं जिनका हमारे बाप–दादा के अमल से कोई तअल्लुक़ नही है। मैं छोटी–छोटी बातों में पड़ना नही चाहता आप खुद अज़ा के दिनों में देखते हैं कि अज़ादारी को अपने ज़ाती और जमाअती मक़सदों के लिए किस बेदर्दी से इस्तेअमाल किया जाता है। क्या मिम्बर से लेकर मातमी दस्तों तक मुक़ाबले बाज़ी नही है और इस मुक़ाबले बाज़ी में हम हद से कितना आगे निकल जाते हैं। आप ज़रा सा ध्यान देंगे तो मेरी बात की हक़ीक़त साबित हो जायेगी।

मेरी बातों का बुरा मत मानिये। मैं आप ही का एक साथी हूँ और जो कुछ कह रहा हूँ वह एक दर्द वाले दिल की पुकार है। यह तहरीर

किसी शख़्स या जमाअत की हिमायत या मुख़ालफ़त या दिल दुखाने के लिए नही लिख रहा हूँ बल्कि खुद अपना जायज़ा लेने के लिए और आपका ध्यान अपनी–अपनी तरफ दिलाने के लिए लिख रहा हूँ। अपनी आने वाली नस्लों के इस सवाल के जवाब में लिख रहा हूँ जो कल सवाल करेंगे कि जब दीन में बदलाव का बाज़ार गर्म हो रहा था तो सब खामोश क्यों थे? इसलिए मैं हक़ बात कह कर मुँह और कानों पर खामोशी सजाए रखने के इल्ज़ाम को हटा रहा हूँ।

यहाँ लोगों का नाम लिए बिना एक क़िस्सा नक़्ल करना ज़रूरी समझता हूँ कि कुछ दिनों पहले की बात है कि एक जगह ओलमा और मातमी अन्जुमनों के कुछ नुमाइन्दे इकटठा हुए। वहाँ एक मशहूर अहले मिम्बर ने मातमी अन्जुमनों पर निशाने लगाना शुरु कर दिये और ज़ोर इस बात पर था कि इस ज़माने में मातमी अन्जुमनें बुरे रास्तों की शिकार हैं। इस पर वहाँ मौजूद मातमी अन्जुमनों के नुमाइन्दे ने एक ठोस जवाब दिया कि जनाब हमारा काम है फर्शे अज़ा बिछाना हम अज़ादारी के लिए ख़र्च करते हैं और पढ़ने वाले के मुँह माँगे दाम देते हैं अब आप का काम है कि आप मिम्बर से क्या देते हैं।

हक़ीक़त में सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी मिम्बर वालों की है कि वह मिम्बर से ख़ास तौर पर जवानों के सुधार का काम अन्जाम दें। क्या वजह है कि मजलिस के बीच जवानों का एक बड़ा हिस्सा इमाम बारगाह से बाहर होता है और सिर्फ मसाऐब के बाद मजलिस में आता है? वजह यही है कि उन्हें मजलिस में कोई नई बात मालूम होने की उम्मीद नही है, या कोई दिलचस्पी नही है और कभी हालत इसके बिलकुल उलट होती है कुछ मजलिसों में बात तो कोई नई नही है मगर पढ़ने वाले का अन्दाज़ ऐसा है कि वह अपने फन को दिखाकर हज़ारों की भीड़ को उठाता बैठाता है। बहुत ही माफी अगर मेरा जुमला बुरा लगा हो लेकिन मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूँ जो सिर्फ इसलिए मज़हब को बदल कर बयान कर रहे हैं कि इसमें मेहनत कम और आमदनी ज़ियादा है और यह तबसरे भी खुलेआम करते हैं कि इस क़ौम को बेवक़ूफ बनाना सबसे ज़ियादा आसान है। इन लोगों ने कोई ठोस काम करने के बजाय आम मोमिनों को ख़यालात में उलझा दिया है और मिम्बर को नफरतें फैलाने का रास्ता बना दिया है।

आज वह मिम्बर जो अहले बैत के मक़सद को फैलाने का सबसे बड़ा रास्ता है इसी से शीअीयत की बुनियादें हिलाने की कोशिश की जा रही है, इस सामराजी साज़िश पर अमल किया जा रहा है कि इनके मिम्बर वालों को खरीद लो, ओलमा और मिल्लत के बीच दरारें डाल दो, गुमनाम और जाहिल लिखने वालों से बुनियादी अक़ीदों के खिलाफ लिखवाओ, शीअीयत की ताक़त के सबसे बड़े सरचश्मे मरजेइयत पर गहरी चोट मारों और शीअीयत को तबाह कर दो और अगर यह पूरी तरह तबाह न भी हो सके तो इसे सिर्फ रस्मो रिवाज तक ही घेर दो।

सदियों से सामराज और सामराजी गुमाशेते मरजेइत की ताक़त के आगे बेबस रहे हैं। आयतुल्लाह शीराज़ी की तम्बाकू हराम होने से लेकर इस्लामी इन्क़िलाब के बरपा होने तक दुनिया गवाह है कि शीआ कितना ही बेअमल क्यों न हो लेकिन जब भी मरजेइत, इस्लाम और शीअीयत के बचाने के लिए मैदान में आई पूरी मिल्लत जुग़राफियाई सरहदों का लिहाज़ किए बिना मराजेअः इज़ाम की हिमायत में आ गई और

हर मोड़ पर सामराजी इरादों को नाकाम बना दिया।

आप अज़ादाराने हुसैन (अ0)! कर्बला की आवाज़े ''हल मिन नासेरिन यन्सुरना'' का जवाब हैं। आप आज के ज़माने में अज़ादारी कि ज़रिए से हुसैन (अ0) की मदद में लगे हैं। एक हक़ीक़ी, हुसैन (अ0) की मदद करने वाले को यज़ीदी साज़िशों पर नज़र रखनी चाहिए। दुश्मन जानता है कि वह सामने आकर आपको हरा नही सकता, इसी लिए उसने मुनाफ़िक़त का चोला ओढ़ लिया है और दीन व ईमान बेचने वाले लोगों के रास्ते से मरजेइयत के मक़ाम को चोट पहुँचा रहा है।

आप खुद साचिये कि ग़ैबते कुबरा के ज़माने में अगर हम इस एक वहदत के मरकज़ से भी हाथ धो बैठे तो फिर हमारा क्या होगा? ग़ैबत के ज़माने में कौन हमको रास्ता दिखायेगा? बेशक हमारा इमाम (अ0) हमारा हक़ीक़ी ज़िम्मेदार और रास्ता दिखाने वाला है लेकिन हम लोग वसीले के क़ायल हैं क्या किसी भी ज़माने में ऐसा हुआ या हो सकता है कि इमाम (अ0) एक–एक शख़्स को रास्ता दिखाएँ? यक़ीनन बड़े मराजेअः वह वसीला हैं जिनके ज़रिए से इमामों के अहकाम तक हम पहुँच सकते हैं।

इसतेमारी ताक़तें करोड़ों डालर ख़र्च कर रही हैं ताकि हमारी सफ़ों को तोड़ने की हवा दी जा सके, हम बराबर छोटे–छोटे गिरोहों में बंटते चले जाएँ और फिर नाम निहाद जिहादी ताक़तों से हमारी हर आबादी को बंजर बना दिया जाए।

हुसैनी सिपाही को अपने बचाव की तरफ से इतना अन्जान नही होना चाहिए। अब जब कि हम चारो तरफ से ख़तरों में घिर चुके हैं, दुश्मन अन्दरूनी और बाहरी दोनों तरफ से बराबर हमें नुक़सान पहुँचा रहा है हमें दोस्त और दुश्मन को पहचानना पड़ेगा, हमें अपनी सफ़ों में छुपी हुई काली भेड़ों का रास्ता रोकना पड़ेगा।

सबसे ख़तरनाक चाल जो यह मुनाफ़िक़ इस्तेअमाल करते हैं वह लोगों के जज़्बात को भड़काना है। यह जानते हैं कि अज़ादारी और मौला के नाम पर हम जब चाहेंगे, जैसे चाहेंगे अज़ादारों को इस्तेअमाल कर जायेंगे और यह कर रहे हैं कि अज़ादारी में अपनी मर्ज़ी की रोज़ नई और जाहिलाना बातों को मिलाकर दूसरों को यह कहने का मौक़ा दे देते हैं कि यह अक़्ल, होश और समझ से ख़ाली वहम के पीछे भागने वालों की जमाअत है जिसका अक़्ल और समझ से दूर का भी वास्ता नही है।

मगर ऐ मातमी जवानों! यह कब तक होता रहेगा? क्या आप सोंचते समझते नही है कि जो लोग इस तरह की चालें चलते हैं वह खुद किस चीज़ के मालिक हैं, खुद उनकी बातों और कामों में कितना टकराव है। इन काली भेड़ों को एक बड़ा फायेदा (Advantage) वह कुछ मुल्ला पहुँचाते हैं जो दीन के लिबास में दीन का सौदा करते हैं, यह मुनाफिक़ उन्ही मुल्लाओं के किरदार को लोगों के सामने लाकर मिल्लत को ओलमा से गुमराह कर देते हैं।

यह इस्लाम को न जानने वाली मुल्लाइयत इस्लाम के लिए ख़ास तौर से शीअियत के लिए एक बहुत बड़ी मुसीबत है। मुझे यक़ीन है कि मेरे मातमी जवान मेरी बातों को उसी सच्ची नज़र से देखेंगे जिस सच्चाई के साथ मैं खुदा को गवाह करके यह लिख रहा हूँ।